सितम्बर 2025

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

मन

(विचार करता है)

चित्त

(बाहर भटकाता है, फोटो दिखाता है)

बुद्धि

(फायदा-नुकसान दिखाती है, निर्णय करती है)

अहंकार

(कार्यों के लिए हस्ताक्षर करता है)

अंत:करण अर्थात् पार्लियामेन्ट पद्धति! मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, ये चार मेम्बरों (सदस्यों) की पार्लियामेन्ट चलती है अंदर। इन चारों में बहुमत से कार्य होता है। इसमें अहंकार प्रेसिडेन्ट है, बुद्धि प्रधानमंत्री है और मन-चित्त, वे दोनों वोट देने वाले हैं।

पूज्यश्री दीपकभाई के साथ अक्रम क्रूज़ रीट्रीट : 12 से 16 जुलाई 2025

वर्ष : 20 अंक : 11
अखंड क्रमांक : 239
सितम्बर 2025
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2025
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अंत:करण का स्वरूप

संपादकीय

इस लौकिक जगत् में अंत:करण के बारे में कई भ्रामक मान्यताएँ प्रचलित हैं। देह तो प्रत्यक्ष दिखाई देता है परंतु अंत:करण को पहचानना और उसे समझना सामान्य लोगों के लिए मुश्किल है। कुछ लोग अंत:करण को ही आत्मा की आवाज़ मानते हैं, कुछ लोग तो अंत:करण में सिर्फ मन ही है, ऐसा मानते हैं। कभी मानते हैं कि मैं सोचता हूँ, कभी मानते हैं कि मेरा मन मुझे परेशान करता है, मेरा मन भटकता है, मुझे मन को स्थिर करना है, परंतु सही बात को नहीं समझने से कोई समाधान प्राप्त नहीं होता।

आत्मविज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री), जो कि खुद देह से, वाणी से, मन से, बुद्धि-चित्त-अहंकार से निरंतर बिल्कुल अलग बरतते हैं, वे ही अंत:करण के वास्तविक स्वरूप और उसकी कार्यपद्धति को पहचान करा सकते हैं! अंत:करण चार चीज़ों से बना हुआ है, मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार। मनुष्य देह जिस आधार पर कार्य करता है, इस अंत:करण के चारों भाग के सहयोग से कार्य होता है। किसी भी कार्य की पहली फोटो, पहली छाप एक्ज़ेक्ट सूक्ष्म में आंतरिक विभाग में आती है, जिसे अंत:करण कहते हैं और बाद में वही स्थूल में बाह्य विभाग में रूपक में आती है, जिसे बाह्यकरण कहते हैं।

वास्तविकता में अंत:करण क्या है? उसके विभागों को मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार के भौगोलिक स्थानों और लक्षणों से पहचाना जा सकता है, मन के फादर-मदर, बुद्धि यानी इन्डाइरेक्ट प्रकाश, चित्त यानी ज्ञान-दर्शन, अहंकार यानी अज्ञानता। क्या ये सब स्वतंत्र काम करते हैं? या फिर सब मिलकर कैसे काम करते हैं? अंत:करण का आत्मा से क्या संबंध है? मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार का धर्म और आत्मा का धर्म, ये सब अपने-अपने धर्म में आ जाएँ, उसे ज्ञान कहते हैं, इन सभी बेसिक बातों का उल्लेख प्रस्तुत अंक में हुआ है। इनकी विस्तृत जानकारी को आप्तवाणी 10 पूर्वाध और उत्तरार्ध में शामिल किया गया है।

आत्मोत्थान के लिए तो अंत:करण में कौन से गुण बिगड़े हुए हैं, उनका पता लगाकर उन्हें कैसे सुधारें, इतना ही करना है। परंतु खुद को लगता है कि मैंने सोचा, मैं ही करता हूँ, सिर्फ अहंकार ही करता है। अहंकार को ही अपना आत्मा माना है, वह भूल हो जाती है। मुमुक्षुगण आत्मज्ञानी की प्रत्यक्ष उपस्थिति में ज्ञानविधि द्वारा एक ही घंटे में दिव्यचक्षु प्राप्त कर लेते हैं। ज्ञानी पुरुष के आत्मज्ञान द्वारा आप खुद कौन हो और आप मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार से अलग हो, वह भान होता है। उसके बाद पाँच आज्ञा के पालन से अंत:करण की शुद्धि होती रहती है, कषायों की वजह से जो दु:ख होते थे, वे बंद होते जाते हैं। उसके बाद इस शुद्धि से ही वास्तविक आनंद उत्पन्न होता है, हमेशा के लिए शांति हो जाती है!

जय सच्चिदानंद

अंतःकरण का स्वरूप

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

प्रयत्न, मन की स्थिरता के...

कुछ जानने की इच्छा होती है, नया कुछ जानने की?

प्रश्नकर्ता : हाँ, होती है।

दादाश्री : क्या जानने की इच्छा होती है?

प्रश्नकर्ता : इस जगत् के जो रहस्य हैं उन्हें जानने की इच्छा होती है। मनुष्य क्यों ये सब चक्कर में पड़ जाता है?

दादाश्री : सिर्फ मनुष्य ही पड़ता है या बाकी सभी जीव भी पड़ते हैं चक्कर में?

प्रश्नकर्ता : उन लोगों को इतने विचार नहीं आते, मनुष्य को ही विचार आते हैं। जब भगवान की भक्ति करने बैठते हैं तभी खराब विचार आते हैं।

दादाश्री : हाँ। उसी समय खराब विचार आते हैं। वर्ना क्या दिन भर अच्छे विचार ही आते हैं?

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं लेकिन जब नॉवल (नवलकथा) वगैरह कुछ पढ़ता हूँ तब मेरा मन उसमें बिल्कुल स्थिर हो जाता है।

दादाश्री : जब नॉवल पढ़ते हो तब स्थिर हो जाता है न! नॉवल यानी क्या? फिसलना। यानी फिसलने में मन स्थिर ही रहता है। ऊपर चढ़ने में मन ज़रा अस्थिर हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : हमें इसे एक जगह पर स्थिर करना है।

दादाश्री : लेकिन आप खुद अस्थिर हो। अस्थिर किसी और को स्थिर कैसे कर सकता है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन मन स्थिर हो जाए तभी हम स्थिर हो सकते हैं।

दादाश्री : लेकिन सबसे पहले आप ही अस्थिर हो, मन के कारण। मन से अस्थिर रहने से तो बहुत नुकसान है। मन पर ही अगला जन्म आधारित है। अब मन को स्थिर कैसे कर पाओगे आप? उसके लिए तो किसी की मदद लेनी होगी।

मन स्थिर होने से क्या फायदा होगा, ऐसा आपने हिसाब लगाया है?

प्रश्नकर्ता : शांति मिलेगी।

दादाश्री : अस्थिर किसने किया है?

प्रश्नकर्ता : हमने।

दादाश्री : क्यों आपने किया? आपने जान-बूझकर अस्थिर किया है? आपको हिताहित का पता नहीं है, खुद का हित किसमें है और अहित किसमें है उसका पता नहीं होने से मन का उपयोग कैसे भी किया है। खुद का हित किसमें है और अहित किसमें है ऐसा यदि पता होता तो खुद के हित में ही उपयोग करते। अब, मन तो आउट ऑफ कंट्रोल (बेकाबू) हो गया है। अब हिताहित

की समझ दें ऐसा ज्ञान प्राप्त करे उसके बाद स्थिर होगा। ऐसे ज्ञानी पुरुष की कृपा लेनी होती हैं जो कि खुद स्थिर हो चुके हैं, निरंतर स्थिरता में ही रहते हैं। फिर आपको भी स्थिर कर देते हैं। तब सब काम हो जाता है, वर्ना कुछ भी नहीं हो सकता।

पहले पहचानो अपने मन को

प्रश्नकर्ता : भक्ति के प्रवाह में मन और बुद्धि को कॉन्ट्रोवर्सी (विरोधाभास) होती है, तो इन दोनों की कॉन्ट्रोवर्सी में संतुलन कब आएगा?

दादाश्री : इन सब को जो परेशान करता है न, वह परेशान कौन करता है, उसका चेहरा देख लेना चाहिए, पहचान लेना चाहिए। आप तो मन को नाम से ही पहचानते हो क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : लेकिन आपको कौन-कौन परेशान करता है, मन करता है?

प्रश्नकर्ता : मन।

दादाश्री : लेकिन क्या उस मन को पहचाना है आपने? उसे पहचानो तो सही! आप अपने मन को नहीं पहचानते, तो औरों के मन को कैसे पहचानोगे? आपने जो मन जाना है, ऐसा तो सभी लोग, छोटे बच्चे भी कहते हैं, 'मेरा मन मुझे परेशान करता है।'

आपको पहचान लेना चाहिए उसे। तो कहते हैं, उसकी उम्र कितनी है, उसकी जाति क्या है? वह सब जान लेना चाहिए। उसे पहचान लोगे तो वह वश हो जाएगा। तूने प्रयत्न नहीं किया उसे पहचानने का? हमें परेशान करने वाले को, जिसने हम पर दावा दायर किया हो उसे हमें पहचान लेना चाहिए कि 'भाई, कौन है?' उस व्यक्ति को पहचानो तो सही!

अंत:करण का स्पष्टीकरण

यह स्पष्टीकरण हो जाए ऐसा नहीं है, इसीलिए पूरा जगत् उलझन में हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह स्पष्टीकरण हो जाए ऐसा है ही नहीं।

दादाश्री : भान ही नहीं है न, इसका कोई! पूरी दुनिया जिस साइन्स (विज्ञान) की खोज में है, उस साइन्स का सर्व प्रथम संपूर्ण स्पष्टीकरण हम देते हैं। मन को समझना बहुत मुश्किल है। मन क्या है? बुद्धि क्या है? चित्त क्या है? अहंकार क्या है? इन सब का यथातथ्य स्पष्टीकरण हम देते हैं।

अंत:करण चार चीज़ों से बना हुआ है। 1. मन 2. बुद्धि 3. चित्त और 4. अहंकार।

चारों ही रूपी हैं और समझ में आ सकते हैं। चक्षुगम्य नहीं हैं, ज्ञानगम्य हैं। ये कम्पलीट फिज़िकल हैं। शुद्ध आत्मा का और इनका कोई लेना-देना नहीं है। उनसे पूर्णत: अलग ही हैं। हम पूर्णत: अलग हैं इसलिए उनका दरअसल वर्णन कर सकते हैं।

पहले अंत:करण में, बाद में बाह्यकरण में

ये मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार इनका हर एक का फंक्शन (कार्य) अलग-अलग होता है फिर भी हर एक कार्य चारों के सहयोग से ही होता है। मनुष्य देह जिस आधार पर कार्य करता है, उसके दो विभाग हैं : (1) स्थूल - बाह्य विभाग, जिसे बाह्यकरण कहते हैं। (2) सूक्ष्म - आंतरिक विभाग, जिसे अंत:करण कहते हैं।

पहले अंत:करण में होता है, उसके बाद बाह्यकरण में आता है। अत: जिसे अंत:करण

देखना आ गया उसे ऐसा समझ में आ सकता है कि अभी कुछ देर बाद क्या होगा? और अंत:करण के चार ही भाग हैं, पाँचवाँ भाग नहीं है!

अंत:करण यानी क्या? वह आंतरिक है। किसी भी कार्य की पहली फोटो, पहली छाप अंत:करण में आती है और फिर वही बाह्यकरण में तथा बाह्य संसार में रूपक में आती है। पहले अंत:करण में सूक्ष्म रूप में अंदर होता है और बाद में उसकी फोटो के रूप में यह स्थूल में होता है। किसी को अंत:करण देखना आता हो तो वह बता सकता है, कि अब बाहर ऐसा होगा।

इस अंत:करण की फोटो हम देख सकते हैं कि अभी क्या काम चल रहा है! इसलिए हम जान जाते हैं कि अब इसके बाद बाह्यकरण में यह होगा। जिसे 'नेगेटिव' (जिससे फोटो निकलती है वह) देखना आ गया वह 'पॉज़िटिव' (फोटो) के बारे में बता सकता है। यानी कि अंत:करण में पहले और उसके आधार पर बाह्यकरण चलता है। सारी इन्द्रियाँ भी उसके अधीन हैं।

ये लोग अनुभव के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं जबकि दर्शन का विषय अलग है। अनुभव गलत भी हो सकता है। कभी वह सही भी हो सकता है और सही न भी हो। अत: उसे अनिश्चित चीज़ कहते हैं। लेकिन अंत:करण का जो दर्शन है, वह तो एक्ज़ेक्ट निकल जाता है। 'नेगेटिव' देख ली 'पॉज़िटिव' का सभी कुछ दिखाई देता है। (पहले) 'नेगेटिव' बने बगैर रहता नहीं है। अंत:करण में 'नेगेटिव' बनता ही रहता है।

उलटी होने वाली हो, तो उसका अंदर अंत:करण में पहले ही पता चल जाता है लेकिन वहाँ तुरंत सावधान हो जाता है। वह बाथरूम की ओर दौड़ता है। अंत:करण में पहले हो जाता है लेकिन पता नहीं चलता उसका क्या कारण है? वह उलटी तो असर करती है न, इसलिए वहाँ इफेक्ट होता है इसलिए चित्त जल्दी से वहाँ पर जाता है, जबकि दूसरे कितने ही इफेक्ट ऐसे होते हैं कि चित्त बाहर गया हो तो आता ही नहीं, इसलिए पता नहीं चलता। फिर सब उलझन हो जाती है। बुजुर्ग लोग कहते थे न कि, 'अब मेरा जाने का टाइम (समय) हो गया है', ऐसा भी पता चल जाता था। 'अब मेरा आज का दिन नहीं निकल पाएगा इसलिए तैयारी करके रखो।' क्योंकि अंत:करण में हो जाता है, उसके बाद बाह्यकरण में होता है। पहले अंत:करण में हुए बगैर बाह्यकरण में नहीं हो सकता। अंत:करण का गोला देखना आ जाए तो इन ज्योतिषियों के गोले में देखने नहीं जाना पड़ेगा। ये तो ज्योतिषियों से कहते हैं कि, 'गोले में मेरा देखकर बताइए ज़रा।' 'अरे, तू अपने अंदर ही देख ले न!'

अंत:करण का विकासक्रम

प्रश्नकर्ता : ये मन-बुद्धि-चित्त व अहंकार और हृदय इन पाँच चीज़ों से मनुष्य का, सभी जीवों का चल रहा है?

दादाश्री : हाँ, पाँच से ही सब कुछ चल रहा है। जानवरों में मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार सब कुछ लिमिटेड (सीमित) होते हैं और मनुष्यों में अनलिमिटेड (असीम) होते हैं।

प्रश्नकर्ता : दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय जीव हैं, उनमें मन की गांठें हैं क्या? अंत:करण है क्या?

दादाश्री : उनमें मन ही नहीं है। दो-तीन और चार इन्द्रिय तक मन नहीं है और पाँच इन्द्रिय वाले (जानवरों) में मन हैं लेकिन सीमित मन, लिमिटेड मन हैं। वे कितना समझते हैं कि अगर

हम बर्तन में खाने का कुछ रखते हैं तो वह गाय तुरंत समझ जाती है। वह संज्ञा उत्पन्न होती है, उतना ही समझती है। अगर लकड़ी छुपाकर ले जा रहे हों न, तो गाय समझ जाती है कि मारेंगे। ये संज्ञाएँ हैं। वे चार ही संज्ञा (आहार-मैथुन-निद्रा-भय) जानते हैं, सिर्फ उतना ही मन है उनका। उनमें अन्य कोई विशेष मन नहीं है। फिर भी कोई व्यक्ति बंदर को सिखाकर मन को बहलाएँ तो वह ज़रा आगे बढ़ेगा। परंतु सिर्फ मनुष्यों का मन ही अनलिमिटेड (अमर्यादित) है। सिर्फ मनुष्य ही ऐसा है जिसका मन अनलिमिटेड है। जितना उसे डेवेलप (विकसित) करना हो उतना हो सकता है। यानी कि मनुष्यों में मन की सीमा नहीं है लेकिन जितना खिला उतना उसका! असीम तक पहुँच सकें, ऐसा है मन। इन जानवरों में सीमित मन हैं। सीमित मन अर्थात् संज्ञा से समझ जाते हैं जबकि आप तो संज्ञा बिना ही दूसरी बातें भी समझ जाते हो।

प्रश्नकर्ता : एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक में अहंकार कब उत्पन्न हो जाता है?

दादाश्री : वह तो जब मन लिमिटेड नहीं हो, बुद्धि लिमिटेड नहीं हो, चित्त और अंत:करण भी लिमिटेड नहीं हों, वह अनलिमिटेड हुआ। वहाँ पर अहंकार उत्पन्न होता है। सिर्फ इन मनुष्यों में ही और वह भी सिर्फ हिन्दुस्तान के मनुष्यों में ही! बाहर वालों में (दूसरे देश वालों में) तो अहंकार हैं ही नहीं बेचारों में! उनमें तो साधारण, बहुत कम अहंकार हैं।

प्रश्नकर्ता : थोड़ा-बहुत अहंकार तो होगा ही न?

दादाश्री : नहीं, उनमें बहुत कम, वह भी साहजिक अहंकार है जबकि अपने यहाँ तो अहंकार की सीमा ही नहीं है न! अपने यहाँ तो सात पीढ़ी तक का अहंकार है, 'मेरे बेटे का बेटा खाए और उसका बेटा भी खाए', उनके लिए इकट्ठा करते हैं।

अरे, मनुष्यों में भी चौदह लाख स्तर हैं! तो ये अफ्रीका वाले हैं न, उनमें मन हैं तो सही लेकिन ज़रा भी डेवेलप्ड नहीं है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार सब हैं तो सही लेकिन अंडरडेवेलप्ड स्थिति में हैं। अब उसमें से डेवेलपमेन्ट शुरू होते, होते, होते अपने यहाँ पर हिन्दुस्तान में आते हैं, तब उनमें मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार सब कुछ फुल्ली डेवेलप (पूर्ण विकसित) हो चुके होते हैं। बाकी जगह पर तो, हिन्दुस्तान के अलावा बाहर भी चित्त है तो सही लेकिन चित्त जैसी चीज़ को वे लोग समझ नहीं सकते। वहाँ पर उसका नाम भी नहीं दिया गया है। चित्त का अनुभव होता है लेकिन वे लोग उसे 'मन' कहते हैं। मन में दोनों का समावेश करते हैं। हमने दोनों के अलग-अलग भाग किए हैं क्योंकि यहाँ पर तो साइन्टिस्ट (वैज्ञानिक) लोग हैं न!

विभाजन, अंत:करण का

प्रश्नकर्ता : मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार में, इन चारों में डिमार्केशन लाइन (भेदरेखा) कैसे डालनी है? अंदर से उठने वाली आवाज़ अहंकार की आवाज़ है या बुद्धि की दलीलें हैं?

दादाश्री : यह डिमार्केन लाइन 'ज्ञानी' के अलावा कोई डाल ही नहीं सकता न! लोग जानते ही नहीं हैं न, तो फिर डिमार्केन लाइन कैसे डालेंगे?

प्रश्नकर्ता : ये मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार अंत:करण के अंग हैं या चारों ही अलग-अलग हैं?

दादाश्री : अलग हैं। ये चारों साथ में रहते

हैं, उस भाग को अंत:करण कहा जाता है। तो जिस समय कोई एक काम कर रहा होता है, उस समय दूसरा काम नहीं करता। ये चारों ही भाग अलग-अलग हैं।

प्रश्नकर्ता : तो ये मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, ये सब अलग-अलग चीज़ें हैं?

दादाश्री : हाँ, अलग-अलग चीज़ें हैं, क्योंकि गुणधर्म अलग हैं इसलिए। यों अंत:करण के तौर पर एक ही है लेकिन गुणधर्म अलग हैं इसलिए अलग-अलग हैं। अंदर यह अंत:करण ऐसी चीज़ है न कि इस अंत:करण के चार भाग हैं लेकिन ये चार इसके अलग-अलग टुकड़े नहीं हैं। जिस समय मन काम करता है उस समय मनरूपी अंत:करण हो जाता है। फिर जब बुद्धि काम करती है तब बुद्धिरूपी अंत:करण हो जाता है और जब चित्त काम करता है न, तब चित्तरूपी अंत:करण हो जाता है। इस तरह ये चार भाग हैं लेकिन एक समय में एक ही स्वतंत्र रूप से काम करता है। अब इस अंत:करण में ये सब काम करते हैं।

प्रश्नकर्ता : उनकी यह प्रक्रिया कैसी हैं? मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार की जो सब क्रियाएँ बताई हैं न, वे कैसी हैं? वह समझना है।

दादाश्री : ऐसा है न, इस अंत:करण में चार तरह की क्रियाएँ होती रहती हैं। तो जिस समय जो क्रिया चल रही होती है, वही पूरे अंत:करण को रोककर रखती है। यानी कि जब अंत:करण में सिर्फ विचार ही आ रहे हों, जिस समय वह विचार करने लगे तब उसे माइन्ड (मन) कहते हैं। बाहर भटकने गया हो तब चित्त कहते हैं और डिसिज़न (निर्णय) ले रहा हो उस समय बुद्धि कहते हैं। व्हेर इज़ प्रॉफिट एन्ड व्हेर इज़ लॉस (कहाँ फायदा है और कहाँ नुकसान है) ऐसा डिसिज़न ले रहा हो उस समय बुद्धि है, और 'मैंने किया, मैने किया,' वह इगोइज़म (अहंकार) है। संडास जाने की शक्ति नहीं है फिर भी कहता है कि, 'मैंने किया, मैंने किया!' यानी वहीं के वहीं पर अंत:करण के ये चार भाग हैं। जिस समय जो कार्य करता है उस अनुसार उसे नाम दिया जाता है।

मन का स्वरूप

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह तो आपने स्थूल बताया, अंदर से उठ रहे विचारों में डिस्टिंग्विश (अलग) करना है।

दादाश्री : उसके बारे में ही मैं बता रहा हूँ न यह। अब यह उसकी ही बात बता रहा हूँ! अपने अंत:करण में चार भाग हैं। अंत:करण तो एक ही है लेकिन उस समय जो भाग काम कर रहा होता है उसका ही पूरा अंत:करण माना जाता है। जिस समय विचारणा करने लगता है उस समय मन का साम्राज्य रहता है। यानी जब मन काम कर रहा होता है उस समय बस विचार पर विचार, विचार पर विचार, केवल विचारों के ही बवंडर चलते रहते हैं। विचारों के अलावा और कुछ भी नहीं, उसे मन कहते हैं। मन बाहर नहीं जाता। लोग कहते हैं न, मेरा मन मुंबई जाता है, इधर भटकता है और उधर भटकता है। मन इस तरह नहीं भटकता। जो नहीं भटकता उसे मन कहते हैं। इतनी भूल हैं लोगों की। लोग ऐसा नहीं कहते कि ऑफिस में होता हूँ तब भी मन घर पर चला जाता है? वह क्या है? तुझे यह समझ में आया कि, मन किसे कहेंगे?

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब अंदर से विचार उठ रहे होते हैं तब अंदर इतनी अधिक उलझन होती हैं कि वह विचार बाहर जाने वाला विचार है या अंदर जाने वाला विचार है अथवा भटकने

वाला विचार है या नहीं भटकने वाला विचार है, यही समझ में नहीं आता।

दादाश्री : बाहर विचार रहता ही नहीं है, विचार अंदर ही रहता है। मन ऐसी चीज़ है कि जो शरीर से बाहर नहीं निकलता। अगर निकलता तो कितने ही लोग, साइन्टिस्ट और योगी उसका दरवाज़ा ही बंद कर देते... फिर से अंदर आने ही नहीं देते लेकिन मन इस शरीर से बाहर निकलता ही नहीं है न! इसलिए अंदर सोचता ही रहता है। इस तरह से, उस तरह से सोचता ही रहता है, निरंतर। यह उसकी बाउन्ड्री (सीमा)! उसका और कोई काम नहीं है। विचार रूपी धर्म, वह मन का धर्म है, सहज स्वभावी धर्म है। मन जब मूल स्थिति में पड़ा रहता है तब ग्रंथियाँ, गाँठों के रूप में होती हैं। वे तरह-तरह की ग्रंथियाँ होती हैं और मन एग्ज़ोस्ट (गलन) होता है उस समय विचारों के बवंडर होते हैं।

चित्त का स्वरूप

फिर जब विचारों के बवंडर न हों, तब फिर यहाँ बैठे हो और वह घर पहुँच जाता है, घर की सारी बातें करें तब समझना कि यह चित्त भटक रहा है। चित्त का काम है देह में भटकना और बाहर भी भटकना। जो भटकता है, उसे मन नहीं कहते, उसे चित्त कहते हैं।

ये लोग क्या कहते हैं? मेरा मन यहाँ से मुंबई चला जाता है। मन इस तरह से नहीं जाता। वह चित्त जाता है, चित्त भटकता है। ये बच्चे जब पढ़ाई करते हैं तब उनके माँ-बाप कहते हैं न कि, 'अरे, तू पढ़ रहा है लेकिन तेरा चित्त ठिकाने पर नहीं है।' क्रिकेट में चला जाता है, ऐसा होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : आप यहाँ बैठे हो, तब वह भादरण में घूम आता है; अरे, बोरसद की कोर्ट में भी जाकर आता है, उसे चित्त कहते हैं। उस समय आपको जानना है कि अभी यह चित्त का काम है।

अब पूरे हिन्दुस्तान में यही एक झंझट हो गई है न, मन को और चित्त को एक कर दिया है। खिचड़ी बना दी! चित्त तो बहुत बड़ी चीज़ है इसमें। चित्त जब बाहर भटकता है न, भटक, भटक... तब एकाग्रता करनी हो तो हो नहीं पाती। उसे खूँटे से बाँधना हो तो नहीं बाँधा जा सकता। मन की एकाग्रता नहीं करनी है, चित्त की एकाग्रता करनी है।

चित्त मोड़ने से मोड़ा नहीं जा सकता इसीलिए तो योगी लोग यहाँ, चक्रों पर चित्त को स्थिर करते हैं। वह मन की साधना नहीं है, चित्त की साधना है लेकिन चित्त और मन को पहचानने की शक्ति नहीं होने की वजह से वे चित्त को ही मन कहते रहते हैं। चित्त को तो शरीर में घुसने नहीं देना हो तब भी घुस जाता है, इतनी सूक्ष्म चीज़ है वह। कहीं भी आरपार निकल जाता है। मन स्थूल चीज़ है। यानी कि चित्त और मन दोनों अलग हैं, ऐसा आपको समझ में आया? दोनों के काम अलग हैं।

प्रश्नकर्ता : बाहर निकलता है तब मन का काम चित्त करने लग जाता है या मन का रूपांतरण चित्त में हो जाता है?

दादाश्री : नहीं। सभी अलग-अलग चीज़ें हैं। यह जो चित्त है यह अशुद्ध हुआ चित्त है। चित्त को ही शुद्ध करना है। मन तो बिल्कुल भी नहीं बिगड़ा है। मन का स्वभाव ही है, उल्टा-सुल्टा सब कुछ दिखाना। चित्त ही बिगड़ा है, और भटक, भटक, भटक, भटक... करता रहता है और फिर टिकिट भी नहीं लेता। वह तो

खुदाबक्ष है (बिना टिकिट के यात्रा करने वाला)! मन और बुद्धि कुछ भी नहीं जानते, चित्त पर ही सारा आधार है। चित्त ही बिगड़ा हुआ है, उसी से यह दशा हो गई है। चित्त किस भाव से बना हुआ है वह मैं आपको बताता हूँ। चित्त दो शब्दों से बना हुआ है, वह एक शब्द नहीं है। ज्ञान और दर्शन, इनका साथ में भावार्थ किया जाए तो उसे चित्त कहते हैं। देखता और जानता है, देखता और जानता है। वही भटकते रहने की आदत! यह देख आता है, वह देख आता है, फलाना देख आता है, इधर देख आता है, उधर देख आता है। यहीं पर बैठे-बैठे क्रिकेट भी देख आता है! मन में तो ज्ञान भी नहीं है और दर्शन भी नहीं है। मन में देखने की शक्ति नहीं है जबकि चित्त में देखने की शक्ति है। अत: चित्तशक्ति और मनशक्ति, दोनों अलग हैं।

यानी चित्त में और मन में और क्या डिफरन्स (अंतर) है? तब कहते हैं, मन किसी भी चीज़ को नहीं देख सकता जबकि चित्त तो वहाँ जाकर सब कुछ देख आता है।

चित्त का काम है बाहर भी जाना। यहाँ से ऑफिस में जाता है, ऑफिस में से अपनी कुर्सी-टेबल सब देखकर फिर आ जाता है। ऑफिस की टेबल और कुर्सी दिखाई देती हैं या नहीं, यहीं पर रहकर?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दिखाई देती हैं।

दादाश्री : ज्यों के त्यों?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : मन का स्वभाव देखना नहीं है। मन का स्वभाव बाहर जाना नहीं है। चित्त का स्वभाव है देख सकना।

मन और चित्त का भेद कौन खोज़ता है? या तो जो मन को जीतने की कोशिश कर रहा हो, या फिर मन को हराने की, या फिर आत्मा प्राप्त करने के लिए खोज़ता है। जिसे आत्मा प्राप्त करना हो, वह मन का और चित्त का भेद खोज़ता है।

बुद्धि के लक्षण

प्रश्नकर्ता : अब आप बुद्धि के बारे में ज़रा अधिक स्पष्टता कीजिए।

दादाश्री : हाँ, लोग जिसे बुद्धि कहते हैं, वास्तव में वह बुद्धि नहीं है। जो फायदा-नुकसान देखती है उसे बुद्धि कहते हैं। दूसरा (अन्य बाबतों के लिए) तो बुद्धि पर आरोप लगाते हैं लोग। यहाँ आने वाला व्यक्ति क्या देखता होगा? जगह देखता होगा या फायदा-नुकसान? कहाँ पर मुझे बहुत फायदा मिले और नुकसान न हो और फिर ट्रेन में बैठने वाला?

प्रश्नकर्ता : पहले खिड़की देखता है।

दादाश्री : बस में बैठने वाला? जहाँ जाएँ वहाँ फायदा-नुकसान देखने लगे, उसे बुद्धि कहते हैं। आपने फायदा-नुकसान देखा है कभी? निर्णय करती है कि यह सही है या वह सही है? या फिर इस तरह से नुकसान हो जाएगा, इस तरह से फायदा होगा, तब वह बुद्धि का भाग है। बुद्धि अपना काम करती रहती है, फायदे-नुकसान के व्यापार में रहती है, उस समय बुद्धि का साम्राज्य होता है।

दूसरा, बुद्धि सिर्फ डिसिज़न (निर्णय) देती है। हाँ, फायदा-नुकसान देखने के बाद अब क्या करना चाहिए, वह डिसिज़न देती है। शास्त्रकारों ने, यह 'बुद्धि डिसिज़न लेती है', ऐसा कहा है।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि और चित्त में क्या अंतर है?

दादाश्री : बुद्धि और चित्त में इतना अंतर है कि बुद्धि नया नहीं देख सकती। जो है सिर्फ उतने पर से ही वह डिसिज़न देती है। बुद्धि डिसिज़न देती है जबकि चित्त का डिसिज़न नहीं होता।

मन तो सिर्फ सोचता ही रहता है। जिसका डिसिज़न न हो, उसे मन कहते हैं। जहाँ जिन विचारों का डिसिज़न नहीं होता, अनडिसाइडेड (अनिश्चित) विचार, उसे मन कहते हैं और डिसाइडेड (निश्चित) विचारों को कहते हैं बुद्धि। किसी भी प्रकार के प्रश्न खड़े हों, लेकिन डिसिज़न लेना, वह बुद्धि का काम है और अहंकार के हस्ताक्षर होते हैं।

अहंकार का स्वभाव

अंत:करण का चौथा और आखिरी भाग है, अहंकार। मन और चित्त के साथ मिलकर बुद्धि जो डिसीज़न दे, उसमें आख़िर में हस्ताक्षर करे, वह अहंकार है। जब तक अहंकार के हस्ताक्षर नहीं होते, तब तक कोई कार्य होता ही नहीं। पर बुद्धि जो अहंकार के थ्रु (माध्यम) से आने वाला प्रकाश होने के कारण बुद्धि के डिसीज़न लेने पर अहंकार नियम से ही सहमत हो जाता है और कार्य हो जाता है।

अहंकार अर्थात् अहम् कार, 'मैंने किया' इतना ही, बस! और कुछ वह नहीं भोगता, न ही कुछ करता है। 'मैं करता हूँ', बस इतना ही अहम् कार! 'मैं यह करता हूँ, मैं ही चलाता हूँ', वही उसका अहंकार है। फिर मार भी खाता है।

अहंकार का स्वभाव यानी कोई ऐसे (हाथ जोड़कर) कहे कि, 'भाई, कैसे हैं? आइए पधारिए, पधारिए!' तो फिर वह तुरंत एकदम से टाइट (अकड़) हो जाता है और अगर ऐसा नहीं करे तो फिर चुपचाप बैठ भी जाता है, ऐसा है अहंकार का स्वभाव। अहंकार कार्य कर रहा हो तब हमें उसे पहचान लेना चाहिए कि इस भाग को अहंकार कहते हैं। ऐसा क्यों हो जाता है, वह किसका कार्य है? उस समय मन ऐसा नहीं है, हेल्पिंग (मदद में) तो वे सब होते ही हैं, लेकिन उस समय मुख्य कार्य उसका (अहंकार का) है! चीफ मिनिस्टर (मुख्य मंत्री) कौन है, ऐसा समझ लेना चाहिए।

यह अहंकार धृतराष्ट्र जैसा अंधा है। वह बुद्धि की आँखों से चलता है, फिर भी मालिकी उसी की है। उसमें अहंकार का अर्थ क्या है? खुद ने कुछ भी नहीं किया फिर भी कहता है, 'मैंने किया'! अरे, तू कैसे आया? गाड़ी नहीं लायी? गाड़ी थी तो आया न? यानी सभी ऐसा कहते हैं न, इसे अहंकार कहते हैं। अब, वह अहंकार रखे बिना बोलो तो हर्ज नहीं है। 'मैं आया' भाषा बोलने में हर्ज नहीं है लेकिन वह है अहम् वाली, जबकि यह है निर्अहंकार वाली, समझ में आता है या नहीं?

पार्लियामेन्टरी पद्धति, अंत:करण में...

अंत:करण का उद्भव एकदम से कैसे हो जाता है? वह 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' (वैज्ञानिक सांयोगिक प्रमाण) है। 'एविडेन्स' (संयोग) मिलने से मन उत्पन्न होता है अथवा एविडेन्स मिलने से अहंकार उत्पन्न होता है अथवा चित्त उत्पन्न होता है या बुद्धि उत्पन्न होती है। इसमें किसी की मालिकी है ही नहीं। सब कुछ स्वतंत्र है, 'पार्लियामेन्टरी' (संसदीय) पद्धति है।

यहाँ से बाहर निकलते हैं तो सब से पहले मन में विचार आता है कि 'टैक्सी में जाएँगे या स्टेशन यहाँ से नज़दीक है, चलते हुए जाएँगे? नज़दीक है तो फिर बेकार ही कौन दो रुपये खर्च

करे, क्या करना है?' फिर वापस दूसरी बार सोचता है कि, 'नहीं, बस में चलो न!' फिर तीसरी बार सोचता है कि, 'नहीं, बस की बजाय टैक्सी लेकर जाएँ तो हम सब साथ में बैठकर जा पाएँगे।' उस समय मन बहुत विचारणा में रहता है। इसलिए मन इस तरह से सोचता है, उस तरह से सोचता है, सब कुछ सोचता है कि ऐसा करेंगे, वैसा करेंगे। तब फिर अंत में बुद्धि कहती है कि, 'नहीं, टैक्सी से जाएँगे।' जिसने निर्णय ले लिया वह है बुद्धि का काम। इसलिए वे सब चुप। मन निर्णय नहीं ले सकता, चित्त निर्णय नहीं ले सकता, अहंकार भी निर्णय नहीं ले सकता। बुद्धि के निर्णय लेते ही अहंकार तुरंत हस्ताक्षर कर देता है। उसके हस्ताक्षर तो लेने ही पड़ते हैं। फिर यदि बुद्धि भी उसके हस्ताक्षर न ले, तो नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : अहंकार के हस्ताक्षर नहीं लेती तब तक क्या होता है?

दादाश्री : काम रुका रहता है और फिर भी, अहंकार का *चलण* नहीं है परंतु उसके हस्ताक्षर के बिना चलता भी नहीं है। अहंकार के हस्ताक्षर लें तो काम होता है। यानी कि अंदर पूरी पार्लियामेन्टरी पद्धति चल रही है।

बुद्धि जो डिसिज़न देती है, इगोइज़म (अहंकार) उस पर सिर्फ हस्ताक्षर ही करता है। वह और कुछ भी नहीं करता। जहाँ-जहाँ बुद्धि डिसिज़न देती है, वहाँ-वहाँ वह अहंकार करता है वही उसका काम है। अहंकार हस्ताक्षर करता है। चित्त कहे वहाँ पर वह हस्ताक्षर नहीं करता। अरे, मन कहे फिर भी हस्ताक्षर नहीं करता लेकिन बुद्धि कहे वहाँ इगोइज़म हस्ताक्षर कर देता है। अत: मन जो कुछ भी कहता है न, उस पर बुद्धि हस्ताक्षर करवाती है। मन, बुद्धि और अहंकार सहमत हों तब कोई कार्य होता है।

अहंकार किसके ताबे में है? बुद्धि के ताबे में। बुद्धि जैसा कहे वैसा अहंकार करता रहता है। बुद्धि कहे कि यहाँ हस्ताक्षर करो तो कर देता है। बुद्धि की आँखों से बेचारा हस्ताक्षर करता है लेकिन रौब तो उसी का है। वर्चस्व बुद्धि का और रौब उसका! हस्ताक्षर उसके होते हैं! जैसे कि प्रेसिडेन्ट ऑफ इन्डिया (राष्ट्रपति) हो ऐसा! अहंकार बड़ा है और बुद्धि उसकी असिस्टेन्ट (सहायक) होने के बावजूद भी प्रधानमंत्री की तरह काम कर रही है। अब, बुद्धि जो कर रही है उसके आधार पर चल रहा है। बुद्धि होती है वहाँ अहंकार होता ही है। मन होता है वहाँ अहंकार हो भी सकता है या नहीं भी।

तीनों के मिलने पर कार्य हो जाता है

प्रश्नकर्ता : बुद्धि और अहंकार, दोनों का सम्मिलित डिसिज़न रहता है। यदि वह मन में एकाकार हो जाए तो मन का कार्य होता है और चित्त में एकाकार हो जाए तो चित्त का कार्य होता है। ऐसा हुआ न?

दादाश्री : हाँ, चारों में से जो भी तीन मिल जाएँ न, तो कार्य हो जाता है। कभी रात को जाग गए हों तब मन को संयोगी प्रमाण मिल जाए तो मन उस समय विचारणा में लग जाता है। (तब) जो संयोगी प्रमाण मिला उसके लिए टाइमिंग की कमी थी, लेकिन वह मिला कि फूटा। इसलिए हमें उस तरह के विचार आते रहते हैं, उस समय ऐसे बिज़नेस के विचार नहीं आते, लेकिन वह जिस तरह का है उस तरह के विचार आते हैं, उसे मन कहते हैं। जब मन शुरू होता है तो वहाँ पर चित्त यदि बाहर की कोई बात हो तो फिर चित्त वहाँ जाता है और घर से संबंधित हो तो घर में नीचे जाता है, ऊपर जाता है, चित्त उस समय घूमता रहता है। तब बुद्धि डिसिज़न देने

की तैयारी करती है। अब यदि चित्त इसमें सहमत न हो, चित्त विरोधी हो गया हो, तब बुद्धि मन से मिल जाती है। मन के विचार और बुद्धि एक हो जाएँ तो अहंकार हस्ताक्षर कर देता है। बुद्धि जिसके साथ मिल जाती है अहंकार वहाँ हस्ताक्षर कर देता है। इस तरह से पार्लियामेन्ट हैं चारों की! उनमें से यदि चित्त वहाँ से हट गया हो तो उसका विरोध करके काम आगे चलता रहता है। अहंकार तो सिर्फ, जहाँ बुद्धि कहे वहाँ हस्ताक्षर कर देता है, यह उसका नियम है। या फिर कभी चित्त को अच्छा लगे कि वह यात्रा मुझे बहुत अच्छी लगी तब यदि बुद्धि उसमें सहमत हो जाती है, बुद्धि एक्सेप्ट (स्वीकार) कर लेती है इसलिए डिसाइड (निर्णय) करती है जब तीनों एक तरफ हो जाते हैं तब मन रह जाता है।

ये दोनों हैं जैसे कि प्रधानमंत्री और प्रेसिडेन्ट

प्रश्नकर्ता : बुद्धि और अहंकार दोनों में कैसा संबंध है?

दादाश्री : बुद्धि और अहंकार इन दोनों में संबंध है, रिलेशन है। अहंकार प्रेसिडेन्ट हो और बुद्धि प्रधानमंत्री हो, इस तरह से हैं ये तो प्रधानमंत्री जितना बताए उतने पर प्रेसिडेन्ट को हस्ताक्षर कर देने पड़ते हैं। जैसे प्रधानमंत्री नचाए वैसे नाचना पड़ता है। अहंकार तो अंधा है, उसकी आँखें नहीं हैं, उसे कैसे पता चलता है? तो कहते हैं कि, यदि लोभ में पड़े तो लोभांध कहते हैं, मान में पड़े तो मानांध कहते हैं। वह जिस-जिसमें पड़ता है उसमें अंधा है, ऐसा कहते हैं। मूल रूप से खुद ही अंध है। अहंकार के बिना तो बुद्धि खड़ी ही नहीं रह सकती न! बुद्धि स्वतंत्र रूप से काम नहीं कर सकती। वह तो हस्ताक्षर करवाने के बाद ही काम करती है। यह पार्लियामेन्टरी पद्धति है। अहंकार के बिना तो कोई भी कार्य नहीं हो सकता न!

प्रश्नकर्ता : अहंकार कैसे उत्पन्न होता है और मन में कहाँ पर रहता है?

दादाश्री : मन में नहीं रहता। मन अलग है और अहंकार अलग है। दोनों की दुकानें ही अलग हैं, दोनों का व्यापार अलग है। अहंकार तो बड़ा प्रेसिडेन्ट कहलाता है। मन की इच्छा अनुसार करवाना हो तो अहंकार से हस्ताक्षर होने पर ही हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : इगोइज़्म को ऐसा डर लगता होगा कि यदि इस बुद्धि की नहीं मानूँगा तो मैं गिर जाऊँगा।

दादाश्री : बुद्धि के आधार पर ही तो वह जी रहा है। बुद्धि का आधार ही तो उसका जीवन है। यह बुद्धि है तो तू है। बुद्धि है तो उसका अस्तित्व है, वर्ना अस्तित्व ही नहीं है। फिर भी हैं अलग, बुद्धि और अहंकार दोनों अलग हैं। कई बार तो बुद्धि और अहंकार का मतभेद हो जाता है। बुद्धि कहती है, 'इतना अहंकार करने जैसा नहीं है।' तब वह कहता है, 'करूँगा, बोल!' यानी इस तरह हैं अलग। फिर भी बुद्धि जहाँ कहे वहीं पर वह हस्ताक्षर कर देता है। यह पार्लियामेन्ट तो बहुत ज़बरदस्त है! है पार्लियामेन्ट (सिस्टम) इसलिए कोई और परेशानी नहीं है और गलत भी नहीं है।

विस्तारपूर्वक समझ, इस पद्धति की

यानी कि यों तो अंदर सभी बातें चलती रहती हैं लेकिन किसी भी चीज़ का डिसिज़न दिया हो तो वह पार्लियामेन्टरी डिसिज़न होता है। अंत:करण अर्थात् पार्लियामेन्ट पद्धति! मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, चार मेम्बरों (सदस्यों) की पार्लियामेन्ट चलती है अंदर। इन चारों में बहुमत से कार्य होता है। इसमें अहंकार प्रेसिडेन्ट है, बुद्धि प्रधानमंत्री है और वे दोनों वोट देने वाले हैं।

ये मन और चित्त, दो ही हैं। बुद्धि इन दोनों में से एक के पक्ष में सहमत होती है। बुद्धि को ठीक लगे तो मन के पक्ष में सहमत होती है तब चित्त को छोड़ देती है और चित्त के पक्ष में हो तो मन को छोड़ देती है। वे दोनों तो अचानक सहमत हो जाते हैं। जहाँ बुद्धि सहमत हो जाती है वहाँ अहंकार साथ ही होता है इसलिए वोटिंग बढ़ जाती है न उनकी? एक तरफ एक है और दूसरी तरफ तीन हैं। जहाँ पर तीन हो जाते हैं उसका कार्य हो जाता है अंदर। इस अनुसार होता रहता है।

बुद्धि प्रकाश वाली है और जहाँ बुद्धि दौड़ती है न, अहंकार तुरंत ही वहाँ पहुँच जाता है। क्योंकि अहंकार खुद अंधा है इसलिए बुद्धि के बिना उसका चल नहीं सकता। वह बुद्धि की आँखों से ही देखता रहता है। सिर्फ इतना ही है कि प्रेसिडेन्ट कहलाता है, बाकी, सत्ता सारी बुद्धि के हाथ में है। मन-वन किसी का नहीं चलता। जहाँ बुद्धि हो न, वहाँ पर किसी का भी नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : ऐसा भी हो सकता है न कि किसी चीज़ पर अहंकार के हस्ताक्षर नहीं हुए लेकिन बुद्धि ने डिसिज़न ले लिया, फिर उस दस्तावेज का क्या?

दादाश्री : नहीं। बुद्धि ने डिसिज़न ले लिया न, तो उस पर अहंकार के हस्ताक्षर हो ही जाते हैं इसलिए वह कार्य हो जाता है। यदि अहंकार अलग हो गया हो और बुद्धि अकेली रह गई हो तो वह होगी विधवा की स्थिति में। प्रेसिडेन्ट नहीं हो तो विधवा जैसी ही होगी न!

कभी मन मना करता है तो कभी चित्त मना करता है। बाकी, अहंकार तो हमेशा बुद्धि के साथ ही रहता है, अकेला नहीं रहता। अकेला अहंकार बुद्धि से अलग नहीं होता। बुद्धि और अहंकार हो सके तब तक अलग नहीं होते कभी-कभार अलग होते हैं। बुद्धि के साथ तो अहंकार की सहमति होती है। अब उस सहमति से अलग हो जाना, उसे पुरुषार्थ कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि और अहंकार को अलग करना, वह पुरुषार्थ है?

दादाश्री : वह पुरुषार्थ है। वह व्यवहारिक पुरुषार्थ है।

'अंतःकरण' के भौगोलिक स्थान

प्रश्नकर्ता : तो फिर इन चार चीज़ों (मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार) का शरीर में कोई विशिष्ट स्थान हैं या (इनके बारे में ऐसा) समझ दी गयी है?

दादाश्री : विशिष्ट स्थान हैं सभी के। मन, वह खुद सूक्ष्म रूप में भी है और स्थूल रूप में भी है। इसके विशिष्ट स्थान हैं।

प्रश्नकर्ता : मन का स्थान कहाँ है?

दादाश्री : सूक्ष्म मन का स्थान यहाँ से (दोनों भौंहों के बीच में) ढाई इंच अंदर की तरफ है। इस जगह से ढाई इंच अंदर सूक्ष्म मन का स्थान है। स्थूल मन का स्थान हृदय में है, हार्ट में है। फिर स्थूल चित्त यहाँ पर है।

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर, तो इसे कौन सा भाग कहते हैं? चोटी के नीचे का भाग कहते हैं?

दादाश्री : नहीं। यह सिर के पीछे का भाग है, यह जो भ्रमर होता है न, उससे ज़रा सा नीचे, लेकिन पीछे, वहाँ पर चित्त है।

प्रश्नकर्ता : वह स्थूल चित्त है?

दादाश्री : हाँ, स्थूल चित्त।

प्रश्नकर्ता : फोटोग्राफी की जा सकें, ऐसा है?

दादाश्री : हाँ, फोटोग्राफी की जा सकती है।

यों तो चित्त का स्थान कहाँ पर है? आपकी चोटी है न, वहाँ पर है, पीछे सिर में चोटी वाला जो भ्रमर होता है न, वहाँ पर है। वहाँ चित्त का स्थान है, स्थूल चित्त।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्म चित्त का स्थान कहाँ है?

दादाश्री : सूक्ष्म चित्त तो बुद्धि के साथ रहता है। यानी कि अरूपी है और मन रूपी है। हृदय में मन की पंखुड़ियाँ हैं। रूपी अर्थात् कुछ ही लोग देख सकते हैं, सब नहीं देख सकते उसे। बुद्धि, वह भी रूपी नहीं है एक तरह का प्रकाश है। चित्त भी एक तरह का प्रकाश है लेकिन वह अशुद्ध प्रकाश है। भ्रांति से जो ज्ञान होता है वह सारा अशुद्ध प्रकाश है। इस चित्त को शुद्ध करने से मोक्ष होता है।

प्रश्नकर्ता : आपने ये जो मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार के स्थान बताए हैं, वैज्ञानिकों के डेस्टिनेशन (स्थान) के अनुसार, इन सभी जगह पर ऐसे सेल हैं कम्प्यूटर जैसे, जो दी गई सूचनाओं को इकट्ठा (संग्रह) करते हैं और ज़रूरत पड़ने पर बाहर निकालते हैं, तो अब इसमें विचारों का डिस्टिंग्विश (अलग करना) वैज्ञानिकों की दृष्टि से और आपकी दृष्टि से अलग है। तो क्या उन लोगों की बात बिल्कुल ही गलत है, वैज्ञानिकों की?

दादाश्री : नहीं, बात गलत नहीं है, उन्हें ऐसा लगता है। जैसे कई लोग मानते हैं 'गॉड इज़ क्रिएटर', तो वह उनका दृष्टिबिंदु है। वैसे ही इन्हें ऐसा लगता है कि ऐसा होना चाहिए और उस समय उस बारे में इनकी कुछ बातें सही भी निकलती हैं क्योंकि उनकी फोटो ली जा सकती हैं। उनकी सूक्ष्म फोटो ली जा सकती हैं। ये लोग (वैज्ञानिक) समझ सकते हैं क्योंकि यह सब उन्हें गिफ्ट (भेट) हैं। वे ज्ञानी नहीं हैं फिर भी गिफ्ट है उनके पास। इस गिफ्ट से, दर्शन में दिखाई देता है। हाँ, इसलिए सब सूझ पड़ जाती हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने जो बताया कि मन-बुद्धि व चित्त, ये जो तीन बताए हैं, इन तीनों की ही प्रक्रिया का डिमार्केशन अंदर तो किसी जगह पर है ही नहीं। यह तो पूरा ऐसा एक समूह ही हैं कि जो सूचना को (स्टोर) इकट्ठा करता है और बाहर निकालता है, यह कम्प्यूटर ही हुआ न, एक तरह का?

दादाश्री : यानी यह जो मैंने अंत:करण बताया न, तो उसकी प्रक्रिया हैं ये! उसकी प्रक्रिया जो स्थूल है न, वह हम आपको बता पाते हैं कि इसकी यह प्रक्रिया इस तरह से है। चित्त ऐसा ही करता रहता है, मन ऐसा ही करता रहता है। तो आपको इन्हें पहचानना हो तो, मन में निरंतर विचार आएँ तब समझना कि अभी मन का साम्राज्य है। इस तरह से यह सब समझा जा सकता है।

भेद, स्थूल और सूक्ष्म के

प्रश्नकर्ता : अब मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, इन चारों को ही यों हम चार मानते तो ज़रूर हैं लेकिन क्या यह एक ही शक्ति का अलग-अलग प्रकार से आविष्कार होता है?

दादाश्री : ऐसा नहीं है। एक्ज़ेक्टली (वास्तव में) स्थूल में भी चार हैं। उसमें स्थूल से सूक्ष्म तक का पूरा भाग है। चित्त स्थूल भी है और सूक्ष्म भी है। उस स्थूल में अंदर सूक्ष्म रहा हुआ है। स्थूल अर्थात् उसकी फोटो ली जा सकती है। अहंकार की भी फोटो ली जा सकती है। उसे ये लोग 'चक्र' कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : चित्त जो स्थूल रूप में है वह यहाँ पर (पीछे चोटी के पास) है और सूक्ष्म भाग जो बाहर जाता है, तो उसकी फोटो कैसे ली जा सकती है?

दादाश्री : उसकी जो बैटरी है न, चित्त वह बैटरी के रूप में है कि जिसमें से वह चार्ज हो रहा है। यदि वह नहीं तो चित्त चार्ज नहीं होता। तो यह चित्त की बैटरी के रूप में है। उस बैटरी में से एविडेन्स मिलते हैं तब डिस्चार्ज होता है और डिस्चार्ज होता है तब यहाँ से रामेश्वर जाता है। एविडेन्स मिले तो रामेश्वर जाता है, इसका अर्थ यह नहीं कि चित्त यहाँ से चला गया है। जैसे कि यह लाइट यहाँ पर है लेकिन इसका तेज बाहर जाता है न, उसी तरह से यह चित्त बाहर जाता है और वह सूक्ष्म है लेकिन वास्तव में स्थूल में से उत्पन्न हुआ है वह। यानी कि उस सूक्ष्म चित्त का फोटो लिया जा सकता है, वह चित्त दिमाग़ के पीछे वाले भाग में रहा हुआ है, किसी में वह उभार ज़्यादा होता है और किसी में कम होता है। वह चित्त की फोटो है।

अब जो अपना दशम स्थान है न, जिसे तालू कहते हैं न, जहाँ घी लगाते हैं, वहाँ पर बुद्धि का स्थान है। बुद्धि ऐसी है कि उसकी फोटो ली जा सकती है। बुद्धि जहाँ से प्रकाशमान होती है, उस बैटरी की फोटो ली जा सकती है। और अहंकार कहाँ पर है? वह यहाँ पीछे कमर के नीचे है। बच्चों को 'शाबाश' कहकर नीचे की तरफ पीछे पीठ थपथपाते हो न, तब आप उसके अहंकार को एन्करेज (प्रोत्साहित) करते हो। फिर वह खिलता है। अहंकार की जगह वहाँ पर होने से उसी जगह पर थपथपाना चाहिए, वहाँ शाबाशी देनी पड़ती है। महान पुरुष हाथ से थपथपाते हैं न, 'जाओ, काम शुरू करो', उस समय हाथ वहीं पर पड़ता है। वह अहंकार तक पहुँचता है और उसकी एक्ज़ेक्ट (हूबहू) फोटो ली जा सकती है। कैमरे में फोटो आ सकती है।

मन का जन्म, उसके फादर-मदर

अब, मन कैसे उत्पन्न हुआ है यदि कोई ढूँढ निकाले तो मैं उसे वैज्ञानिक कहूँगा। हर कोई कहता है कि मन मेरा है, मन मेरा है लेकिन मन क्या है? कैसे उत्पन्न हुआ है और किससे बना है? यानी कि क्रिएशन (उत्पन्न) कैसे हुआ है? उसे यह पता नहीं चलता। मन का क्रिएशन निरंतर बदलता रहता है इसलिए यह कैसे बना वह कोई नहीं बता सकता।

प्रश्नकर्ता : मन क्या है?

दादाश्री : हाँ! ऐसा तो पहली बार आपने ही पूछा है। व्हॉट इज़ माइन्ड? (मन क्या है?) हू इज़ फादर एन्ड मदर ऑफ माइन्ड? (मन के माता-पिता कौन हैं?) इसका जन्म कैसे हुआ? माँ-बाप के बिना जन्म हो सकता है क्या?

मन का यों ही तो जन्म नहीं हो सकता। हम आपको इसकी रूपरेखा बताते हैं; पूरा आपको नहीं समझा सकते क्योंकि बाकी का सब अवर्णनीय है, शब्दों से वर्णन नहीं किया जा सकता। अत: जितना वर्णन किया जा सकता है उतना बता रहे हैं। इस मन के माँ-बाप को मैं पहचान गया हूँ।

प्रश्नकर्ता : इसे कैसे समझें?

दादाश्री : किसी से पूछ लेना चाहिए, किसी पुस्तक में फादर-मदर का नाम नहीं लिखा है?

प्रश्नकर्ता : दुनिया की किसी भी पुस्तक में नहीं लिखा है, दादा। वह तो आप ही के पास है।

दादाश्री : फादर-मदर नहीं होते तो माइन्ड होता ही नहीं। फादर-मदर हैं ही। आप जानते

हो फादर कौन है? चाय फीकी आए तो 'चाय फीकी है', ऐसा अभिप्राय देते हो या नहीं?

प्रश्नकर्ता : देते हैं।

दादाश्री : ओपिनियन इज़ द फादर ऑफ माइन्ड एन्ड लेंग्वेज इज़ द मदर ऑफ माइन्ड। (अभिप्राय मन का पिता है और भाषा मन की माता है।) जिस लेंग्वेज (भाषा) में आप ओपिनियन (अभिप्राय) देते हो वह लेंग्वेज मदर है और ओपिनियन फादर है। ओपिनियन नहीं होता तो मन नहीं होता। इस दुनिया में पहली बार ये सारे स्पष्टीकरण हुए हैं, एक्ज़ेक्टनेस में (यथार्थ रूप से)!

मन के फादर और मदर किसी को नहीं मिले हैं। जब से वर्ल्ड (दुनिया) शुरु हुआ है तब से ऐसा नहीं बताया गया है। यह तो पहली बार माइन्ड के फादर-मदर हैं ऐसा बताया गया है। यानी अभिप्राय दें तो मन उत्पन्न होता है। अभिप्राय देने की आदत लोगों में होती है क्या?

प्रश्नकर्ता : होती है।

दादाश्री : उसी से यह मन उत्पन्न हो गया है और कुछ भी नहीं है।

बुद्धि, वह है इन्डिरेक्ट प्रकाश

प्रश्नकर्ता : मन को और बुद्धि को एक कर लें, तभी ज्ञान का दर्शन होता है या यों ही हो जाता है?

दादाश्री : नहीं, बुद्धि की ज़रूरत नहीं है। बुद्धि तो संसारानुगामी है, संसार में ही भटकाने वाली है। यह बुद्धि तो मार खिला-खिलाकर परेशान कर देगी। बुद्धि कभी भी संसार से बाहर निकलने ही नहीं देती। बुद्धि तो इन्डिरेक्ट प्रकाश है। अर्थात् जो डिरेक्ट प्रकाश होता है वही निकलने देता है। बुद्धि संसार-व्यवहार में हितकारी है, लेकिन मोक्ष में जाने में बाधा डालती है। बुद्धि तो संसार-व्यवहार को ही चलाने वाली होती है। संसार में जब बुद्धि की ज़रूरत पड़ती है तब ऑटोमैटिकली (अपने आप) शुरू हो जाती है। बुद्धि, वह संसाराभिमुखी है। वह संसार में फल देती है लेकिन बाहर नहीं निकलने देती, मोक्ष में नहीं जाने देती। मोक्ष में तो ज्ञानप्रकाश की ही ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि और ज्ञान प्रकाश इन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : ऐसा है न, कि बुद्धि क्या है वह मैं तुझे समझाता हूँ। ज्ञान और बुद्धि, दोनों के स्वभाव में ही डिफरन्स (फर्क) है। जैसे सोना और पीतल, दोनों अलग होते हैं न? पीतल है वह सोने जैसा दिखता है लेकिन फिर भी गुणधर्म में फर्क होता है। बुद्धि की परिभाषा तूने सुनी ही नहीं होगी कभी भी! कितने भाग को बुद्धि कहना और कितने भाग को ज्ञान कहना है, उसकी परिभाषा देता हूँ। जहाँ कहीं भी बुद्धि है वहाँ पर आपको 'डार्कनेस' (अंधेरा) लगेगा क्योंकि वह इन्डिरेक्ट (परोक्ष) प्रकाश है और ज्ञान प्रकाश, वह डिरेक्ट (सीधा) प्रकाश है।

'इन्डिरेक्ट' प्रकाश अर्थात् सूर्य का प्रकाश दर्पण पर पड़ा और दर्पण में से प्रकाश रसोईघर में गया। यह 'इन्डिरेक्ट' प्रकाश हुआ। उसी तरह आत्मा का प्रकाश अहंकार पर पड़ता है और वहाँ से बाहर निकलता है, उसे बुद्धि कहते हैं। दर्पण की जगह पर अहंकार है और सूर्य की जगह पर आत्मा है। आत्मा मूल प्रकाशवान है। संपूर्ण स्व-पर प्रकाशक है। वह पर को प्रकाशित करता है और स्वयं को भी प्रकाशित करता है। आत्मा सभी ज्ञेयों को प्रकाशित करता है। अर्थात् अहंकार

के 'मीडियम' (माध्यम) से बुद्धि खड़ी हो गई है। अहंकार का मीडियम खत्म हो जाए तो बुद्धि नहीं रहेगी। फिर 'डिरेक्ट' प्रकाश आएगा। मुझे डिरेक्ट प्रकाश मिलता है। हमारा अहंकार जो बीच में था वह खत्म हो चुका है इसलिए फिर ऐसे सीधा ही प्रकाश पड़ता है, वह ज्ञान है!

चित्त यानी ज्ञान-दर्शन

प्रश्नकर्ता : मन और आत्मा के बीच की जो स्थिति है, वह चित्त है?

दादाश्री : नहीं। अंत:करण का तीसरा अंग चित्त है। चित्त का कार्य भटकने का है, वह जैसी है वैसी फोटो खींच लेता है। यहाँ बैठे-बैठे अमरीका की फिल्म यथावत् दिखलाएँ वह चित्त है। मन इस शरीर के बाहर जाता ही नहीं। जो बाहर जाता है, वह चित्त है और बाहर जो भटकता है, वह अशुद्ध चित्त है। चित्त तो उसकी अशुद्धता के कारण भटकता है। चित्त शुद्ध हो जाएगा तो भटकेगा नहीं। शुद्ध चित्त वही शुद्ध आत्मा है।

चित्त अर्थात् ज्ञान-दर्शन, इन दो गुणों का अधिकारी, वह चित्त है। ये दोनों ही गुण अशुद्ध हों तो वह अशुद्ध चित्त कहलाता है और शुद्ध हों तो शुद्ध चित्त कहलाता है।

यह चित्त तो अंदर भी भटकता है और बाहर भी भटकता है। दिमाग़ में क्या चल रहा है, वह चित्त देख आता है। अनादि काल से चित्त निज घर की खोज में है। वह भटकता ही रहता है। वह तरह-तरह का देखा करता है। इसलिए उसके पास अलग-अलग ज्ञान-दर्शन जमा होते जाते हैं। चित्तवृत्ति जो-जो देखती है उसे स्टॉक करती है और वक्त आने पर ऐसा है, वैसा है, दिखलाती है। चित्त जो कुछ भी देखता है उसमें यदि चिपक गया, तो उसके परमाणु खींचता है और वे परमाणु जमा होने से उनकी ग्रंथियाँ बनती हैं, जो मन स्वरूप है। वक्त आने पर मन पैम्फलेट दिखाता है, उसे चित्त देखता है और बुद्धि डिसीज़न देती है।

हम यहाँ बैठे हुए हों, और वह परदेश में देख आता है, घर-वर सभी देख आता है। वह देख आने का, जान आने का स्वभाव चित्त का है। जबकि मन का स्वभाव दिखाने का है, पेम्फलेट दिखाने का है। मन एक के बाद एक पेम्फलेट दिखाता है। लोग तो किसी का दोष हो तब किसी और को दोषित कहते हैं, कहते हैं कि, 'मेरा मन भटक रहा है!' मन कभी भी इस शरीर को छोड़कर बाहर नहीं जा सकता। जो जाता है वह चित्त है। लोग तो मन को पहचानते ही नहीं, चित्त को पहचानते ही नहीं, बुद्धि को नहीं पहचानते और अहंकार को भी नहीं पहचानते।

अज्ञानता से उत्पन्न अहंकार

प्रश्नकर्ता : अहंकार क्या है? कहाँ से आया और किसे आया? अहंकार कहाँ से उत्पन्न हुआ?

दादाश्री : वह विनाशी चीज़ है। कहीं से आता नहीं है। वह उत्पन्न हो जाता है और नाश (विलय) हो जाता है। फिर डॉक्टर से कहता है कि, 'साहब, मैं मर जाऊँगा, मुझे बचाइएगा।' यह जो भुगतता है न, वह अहंकार है।

प्रश्नकर्ता : अहंकार किसे आया?

दादाश्री : जो नासमझ है, उसे। अज्ञान को अहंकार आया।

दो चीज़ें हैं, अज्ञान और ज्ञान। ज्ञान अर्थात् आत्मा और अज्ञान अर्थात् अनात्मा। उस अज्ञान को अहंकार आया। उसी से यह सब उत्पन्न हो गया।

मूलत: अज्ञानता है। खुद को खुद की

अज्ञानता है। उस रूट कॉज़ से यह सब उत्पन्न हो गया है। यदि वह अज्ञानता खुद सज्ञानता में आ जाए तो यह सब विलय हो जाता है।

यह है डिस्चार्ज परिणाम

प्रश्नकर्ता : तो यह सब कौन करता है? इन सब ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की मूवमेन्ट्स (गति) और इनके मैनेजमेन्ट (संचालन) का कंट्रोलिंग पावर (काबू में रखने वाली शक्ति) किसका है?

दादाश्री : इन पर कंट्रोल (काबू करने वाला) वह रिएक्शनरी पावर (पारिणामिक शक्ति) है, डिस्चार्ज पावर है। अब इस अंत:करण की मूवमेन्ट्स तो हैं ही, लेकिन इसे किसी को चलाना नहीं पड़ता। वह डिस्चार्ज (*निर्जरा*) हो रहा है। डिस्चार्ज में तो किसी को कुछ करना ही नहीं पड़ता न!

प्रश्नकर्ता : अंत:करण स्वसंचालित है?

दादाश्री : स्वसंचालित है, लेकिन वह डिस्चार्ज है। स्वसंचालित अर्थात् यह कोई गप्प नहीं है, डिस्चार्ज हो रही चीज़ है। यानी अभी यह पाँच रतल (पाउन्ड) है तो स्वसंचालित में तो ये बढ़कर पाँच से दस रतल हो सकते हैं, उसमें चीज़ घटती नहीं है जबकि यह तो घटता है। अत: पाँच रतल से चार रतल हो जाता है, चार से तीन हो जाता है, तीन से दो हो जाता है, एक हो जाता है फिर ज़ीरो हो जाता है और यहाँ से अर्थी निकल जाती है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि कम होता जाता है?

दादाश्री : डिस्चार्ज होता जाता है। यानी अंत:करण को स्वसंचालित कहा जाता है। यह स्वसंचालित है लेकिन डिस्चार्ज के रूप में है। जिस तरह टंकी का पानी स्वसंचालित गिरता ही रहता है। इसका अर्थ यह है कि खाली हो रहा है। यानी कि टंकी डिस्चार्ज हो रही है ऐसा कहा जाएगा न!

प्रश्नकर्ता : चार्ज करने वाला हो तभी डिस्चार्ज होगा न?

दादाश्री : चार्ज तो हो चुका है। अभी तक आपने जो सुना और जो भी किया, वह सारा चार्ज (पूरण) हो चुका है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अब वह चार्ज हो चुका है। अब मैं 'आपको' आपके स्वभाव में ला देता हूँ और 'आप' आत्मा के धर्म में आ जाते हो।

धर्म, आत्मा का और अंत:करण का

प्रश्नकर्ता : आत्मा का धर्म और अंत:करण का धर्म इनका भेद विस्तारपूर्वक समझाइए।

दादाश्री : देखो, ये कान हैं। तो हमें नहीं सुनना हो, इस तरह दबा दें फिर भी थोड़ा-बहुत सुन लेता है न? सुन लेता है या नहीं सुन लेता?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अत: सुनना, वह कान का स्वभाव है। आँखों का स्वभाव है देखना। हमें नहीं देखना हो, हम तय करें कि नहीं देखना है फिर भी ऐसे करके आँखें टेढ़ी करके ज़रा देख लेते हैं। इस नाक का स्वभाव ऐसा है कि हमें सुगंध नहीं लेनी हो फिर भी अंदर घुस जाती है। जीभ का स्वभाव ऐसा है कि मिर्च तीखी लगती है। हमारी ऐसी इच्छा हो कि तीखी न लगे फिर भी तुरंत असर हो जाता है। इस बॉडी (शरीर) का स्वभाव है स्पर्श तो ठंड लगते ही तुरंत असर हो जाता है। ये पाँच इन्द्रियाँ ये ज्ञानेन्द्रियाँ हैं और कर्मेन्द्रियाँ किन्हें कहते हैं? ये पैर, हाथ, मुँह - खाते हैं,

संडास-बाथरूम जाते हैं; ये कुल मिलाकर पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं, ये सब अपने-अपने स्वभाव में हैं। अगर संडास जाना हो और कोई ज़्यादा पैसे देने वाला ग्राहक आ जाए तो उसके साथ ज़रा ज़्यादा देर तक बैठा रहता है, उसके (संडास के) स्वभाव को रोककर। फिर वह संडास का स्वभाव चिढ़ जाता है बाद में। वह प्रकृति रिएक्शन (प्रतिक्रिया) करती है। फिर कहता है कि, 'मुझे कब्ज हो गया।' हर एक को अपने-अपने स्वभाव में रहने दो, उसके स्वभाव में हेल्प (मदद) करो। इन पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों की बातें हो गई।

अब दूसरी चीज़ अंदर की बात आती है। मन अपने स्वभाव में है। मन का स्वभाव है सोचना। आपको नहीं सोचना हो फिर भी ज़रा कुछ देखा कि सोचना शुरू कर देता है। उसे बस कुछ मिलना चाहिए। अत: मन अपने स्वभाव में है।

मन, मन के धर्म में हो, तब उल्टे विचार आते हैं और सुल्टे विचार भी आते हैं, लेकिन वह अपने धर्म में है लेकिन सुल्टा विचार आए तब 'खुद' कहता है कि मेरे अच्छे विचार हैं, अत: 'खुद' उसमें भ्रांति से तन्मयाकार हो जाता है और उल्टे विचार आएँ तब खुद उनसे अलग रहता है और तब कहता है कि मेरी इच्छा नहीं है, फिर भी ऐसे उल्टे विचार आ रहे हैं! अंत:करण में सभी के धर्म अलग-अलग हैं। मन का धर्म अलग, चित्त का धर्म अलग, बुद्धि का धर्म अलग और अहंकार का धर्म अलग। ऐसे, सब के धर्म अलग-अलग हैं। पर 'खुद' अंदर दखल करके बखेड़ा खड़ा करता है न? भीतर तन्मयाकार हो जाता है, वही भ्रांति है। आरोपित भाव से अहंकार के कारण तन्मयाकार हो जाता है। आत्मा होने के बाद इन सब को वह 'खुद' अलग रहकर देखता और जानता है।

'मैं चंदूलाल' उसे ही ज्ञानी सब से बड़ा और अंतिम अहंकार बताते हैं। उससे सारा संसार खड़ा रहा है। यह अहंकार जाए तभी मोक्ष में जा पाएँगे।

चित्त आपकी इच्छा न हो फिर भी वहाँ पर ऑफिस में चला जाता है और ऑफिस का टेबल वगैरह सब देख लेता है। इस चित्त का स्वभाव है भटकना। सभी अपने-अपने स्वभाव बता रहे हैं। सिर्फ (व्यवहार) आत्मा ही अपना स्वभाव छोड़कर, बाकी सभी के स्वभाव को कहता है कि, 'मैं कर रहा हूँ।' सिर्फ (व्यवहार) आत्मा ने अपना स्वभाव छोड़ दिया है और दूसरों के स्वभाव को कहता है, 'मैंने किया।' यह विचार किया तो ऐसा कहता है, 'मैंने किया।' 'यह चित्त भटकता है' उसे कहता है, 'मैं भटक रहा हूँ।' ओहोहो! सुना तो कहता है, 'मैंने सुना।' 'मैं संडास जाकर आया, मैंने खाया', कहता है। अरे, किस तरह का व्यक्ति है तू? हर कोई अपने-अपने स्वभाव में है। यह बात साइन्टिफिक (वैज्ञानिक) नहीं लगती? अब सिर्फ आत्मा का स्वभाव पहचानने की ज़रूरत है। बाकी कुछ भी पहचानने की ज़रूरत नहीं है।

मन का धर्म, बुद्धि का धर्म, चित्त का धर्म, अहंकार का धर्म, ये सभी धर्म और आत्मा का धर्म, ये सभी अपने-अपने धर्म में आ जाएँ, उसे 'ज्ञान' कहते हैं। यदि 'हम' किसी एक के धर्म पर दबाव डालें तो फिर वह हो जाता है 'अज्ञान'!

आत्मा का धर्म क्या है? सभी धर्मों को जानना। मन-बुद्धि-चित्त-देह, ये सभी क्या कर रहे हैं यह जानता रहे, उसे आत्मा कहते हैं। सभी अपने-अपने धर्म में हैं और 'आप' अपने धर्म में रहो।

आपको अब क्या करना बाकी रहा है?

अहंकार और बुद्धि को खत्म करना रहा। अब वे खत्म किस तरह से होंगे? 'आत्मा' खुद के धर्म में आ जाए तो वे दोनों निकल जाएँगे। दूसरे सभी तो अपने-अपने धर्म में ही हैं और कुछ भी बदलने की ज़रूरत नहीं है।

सभी अपने धर्म में, तो चले सब ठीक

यह संसार किससे खड़ा है? अंत:करण में मन शोर मचाए तो खुद फोन उठा लेता है और 'हैलो, हैलो' करता है। चित्त का फोन उठा लेता है, बुद्धि का फोन, अहंकार का फोन उठा लेता है इसलिए। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार क्या धर्म निभाते हैं, उसे देखिए और जानिए। 'हमें' किसी का फोन नहीं लेना है। आँख, कान, नाक आदि क्या-क्या धर्म निभाते हैं, उसके हम 'ज्ञाता-द्रष्टा'। यदि मन का या चित्त का या किसी का भी फोन उठा लिया तो सब जगह टकराव हो जाएगा। वह तो जिसका फोन हो, उसे 'हैलो' करने देना, 'खुद' मत करना।

अरे, आपने कभी खाने के बाद पता लगाया है कि भीतर आँतों में और पेट में क्या होता है? सारे अवयव अपने गुणधर्म में ही हैं। कान उनके सुनने के गुणधर्म में नहीं हो तो सुनाई नहीं देता। नाक उसके गुणधर्म में नहीं हो तो सुगंध और दुर्गंध नहीं आती। उसी प्रकार मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सभी अपने गुणधर्म में ठीक से चलते हैं कि नहीं उसका ध्यान रखना है। अंत:करण उसके गुणधर्म में रहे, जैसे कि मन पैम्फलेट दिखाने का काम करे, चित्त फोटो दिखाए, बुद्धि डिसिज़न ले और अहंकार हस्ताक्षर कर दे तो सब ठीक चलता है। अंत:करण में कौन-कौन से गुणधर्म बिगड़े हुए हैं, उसकी जाँच करनी है और बिगड़े हुए हो तो कैसे सुधारना, इतना ही करना है। पर खुद कहता है कि 'मैंने विचार किया, मैं ही बोलता हूँ, मैं ही करता हूँ'। ये हाथ-पैर भी अपने गुणधर्म में हैं पर कहता है कि 'मैं चला'। मात्र अहंकार ही करता है और अहंकार को ही खुद का आत्मा माना है, वही दखल है।

दिव्यचक्षु से शुद्धिकरण

प्रश्नकर्ता : अंत:करण की शुद्धि के लिए जो साधन बताए हैं, वे कितने अंश तक ज़रूरी हैं?

दादाश्री : कौन-से साधन?

प्रश्नकर्ता : जप-तप, वे सब।

दादाश्री : जब तक साध्य वस्तु नहीं मिले, तब तक साधनों में रहना चाहिए। परंतु यदि 'ज्ञानी पुरुष' मिल जाएँ तो कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। 'ज्ञानी पुरुष' खुद ही सब कुछ कर देते हैं और वे नहीं मिले हों, तो आपको कुछ न कुछ करना ही चाहिए। नहीं तो उल्टी चीज़ें घुस जाएँगी। शुद्धिकरण नहीं करो तो अशुद्धि ही होती रहती है या नहीं होती? इसलिए आपको रोज़ कचरा तो समेटना ही पड़ेगा न? 'ज्ञानी पुरुष' मिल गए हों तो उन्हें कहना कि, 'साहब, मेरा निबेड़ा ला दीजिए'। तब 'ज्ञानी पुरुष' एक घंटे में ही सब कर देते हैं, फिर सिर्फ उनकी आज्ञा में रहना है कि 'चलती लिफ्ट में हाथ बाहर मत निकालना, नहीं तो हाथ कट जाएगा और पूरी लिफ्ट रोक देनी पड़ेगी।' यह तो मोक्ष में जाने की लिफ्ट है।

देह के साथ-साथ अंत:करण की भेंट देकर यदि एक ही घंटा ज्ञानी पुरुष के साथ बैठा हो तो संसार का मालिक बन सकता है। हम उस एक घंटे में तो आपके पापों को भस्मीभूत करके, आपके हाथों में दिव्यचक्षु दे देते हैं, शुद्धात्मा बना देते हैं। फिर आप जहाँ जाना चाहें, वहाँ जाइए

न! 'ज्ञानी पुरुष' की उपस्थिति में निकली हुई वाणी आवरणों को भेदकर 'डिरेक्ट' आत्मा तक पहुँचती है और आत्मा तक पहुँचती है, इसलिए तुरंत आपके मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार पकड़ लेते हैं। हमारी वाणी आत्मा में से होकर निकली हुई होती है। जगत् की वाणी मन में से होकर निकली हुई होती है। इसलिए उसे मन 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) करता है और यहाँ आत्मा 'एक्सेप्ट' करता है। परंतु फिर वापिस मन-बुद्धि उसे पकड़ लेते हैं।

ज्ञान के बाद अंत:करण व्यवस्थित के ताबे में

प्रश्नकर्ता : मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार किसकी सत्ता में हैं, यह समझाने की कृपा कीजिए।

दादाश्री : आत्मा प्राप्त होने के बाद में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की पूरी सत्ता 'व्यवस्थित' के ताबे में है। हमें तो सिर्फ यह इफेक्ट ही भुगतना है। इसलिए हम कहते हैं न, 'व्यवस्थित' को सौंप दिया है।

ये मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार उछल-कूद करें तो हमें समझ जाना है कि अंदर क्या 'व्यवस्थित' हो रहा है। सिर्फ देह के बाहर वाले भाग का 'व्यवस्थित' नहीं लेकिन सभी कुछ अंदर... देह के अंदर वाले भाग का भी। यह जितना चंचल भाग है उतना पूरा 'व्यवस्थित' के ताबे में है और सिर्फ अचल भाग ही अपना है। अचल के सिवा सभी कुछ 'व्यवस्थित' है। चंचल भाग है वह पूरा 'व्यवस्थित' के ताबे में है क्योंकि हम कुछ भी चलायमान कर सकें ऐसा कुछ नहीं है। अज्ञानता से ये प्रतिष्ठा होती रहती है। प्रतिष्ठा बंद हो जाए तो मुक्ति हो जाती है। अज्ञान से प्रतिष्ठा करता है कि 'मैंने किया', तभी प्रतिष्ठा शुरू हो जाती है। आत्मा की विभाव दशा हो गई है, दूसरा कुछ नहीं है।

अंत:करण की शुद्धि के साधन

प्रश्नकर्ता : अंत:करण शुद्ध करने का साधन क्या है?

दादाश्री : यहाँ सभी डॉक्टरों को इकट्ठा किया हो तो क्या वे 'दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो' बोलेंगे? कितने बोलेंगे? एक भी नहीं बोलेगा। बुद्धि ऐसी घुस गई है न! शुक्ल अंत:करण खत्म हो गया है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या बौद्धिक परिग्रह बढ़ गए हैं, बुद्धि बढ़ गई है इसलिए?

दादाश्री : हाँ, अत: सहज होने की ज़रूरत है। क्या होने की ज़रूरत है? सहज। उसमें ऐसा सहज होना चाहिए, साथ ही फिर प्रतिक्रमण करने चाहिए कि 'मैं (असीम जय) बोल नहीं पाता। कितने समय से मेरी यह बोलने की इच्छा है, तो इसमें आने वाले मेरे सारे अंतराय दूर करो।' ऐसा करते-करते सेट हो जाएगा और अच्छी तरह से बोल पाएगा। तन्मयाकार होकर अच्छी तरह से बोल पाएगा। बुद्धि ज़रा सी बढ़ी तो शुक्ल अंत:करण खत्म हो जाता है। खुद अलग हो गया अर्थात् खुद अपने आप को अलग कर दिया, इसलिए वह अलग हो जाता है। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' गाने में तन्मयाकार परिणाम हो जाते हैं इसलिए मन में जो विचार आ रहे होते हैं वे भी खत्म हो जाते हैं, अंत:करण शुद्ध होता जाता है।

अब लोगों को इसका कैसे पता चल सकता है? कृपालुदेव ने इतना कहा कि 'शुक्ल अंत:करण वाले ज्ञानी के नेत्र देखकर ही पहचान लेते हैं।' लेकिन शुक्ल अंत:करण किसे कहते हैं? मोक्षमार्ग पूरा हार्टिली मार्ग है। हम में एक सेन्ट भी बुद्धि नहीं है तभी तो देखो न, पूरा मोक्षमार्ग खुल गया

है न! इसलिए श्रीमद् राजचंद्र ने कहा है कि हमारे जो वाक्य लिखे जाएँगे उन्हें कौन दाद देगा? जो शुक्ल अंतःकरण वाला होगा, वही दाद देगा।

इस सत्संग में तो आनंद समाता ही नहीं ऐसा होता है। किसी पर इतना बड़ा (आनंद का) प्रपात गिरता है और किसी पर इतनी छोटी सी धारा गिरती है! क्या कारण है? बुद्धि का संताप परेशान करता है। रोज़ (असीम जय जयकार) बोलने से वह धीरे-धीरे निकल जाता है। अपने मन में इच्छा होती है न कि अरे, इन सब को ऐसा हो रहा है और मुझे ऐसा क्यों नहीं होता? तो फिर बुद्धि निकलने लगती है और बुद्धि घुसी कैसे थी? लोगों ने एन्करेज़ (प्रोत्साहित) किया तब घुसी थी। कोई काम सुधर गया हो तो हम ऐसा समझते थे कि, हमारी बुद्धि अच्छी तरह संभालती है इसलिए घुसी थी। यहाँ (हममें) बुद्धि है नहीं इसलिए (आपकी भी) निकलने लगती है।

ज्ञानी का अंतःकरण

प्रश्नकर्ता : हमारे अंदर जो मन है, वैसा ही मन दादा के पास भी है। हममें बुद्धि हैं, विचार हैं, वे भी दादा के पास हैं।

दादाश्री : सिर्फ आत्मा ही सब में एक सरीखा है, दूसरा सब कुछ फर्क वाला है। दूसरा, आपकी और मेरी बैठक में फर्क है यानी हिसाब में फर्क है। बाकी सब माल तो सबका अलग-अलग होता है, आत्मा सभी में एक सरीखा है।

अभी तो मन अच्छा है न? ज्ञानी पुरुष की उपस्थिति में मन बहुत अच्छा रहता है। उसका क्या कारण है कि उनकी उपस्थिति में जब आपका मन इतना अच्छा रहता है, तो उनका मन कितना सुंदर होगा? उनमें मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार भी होते हैं लेकिन सुंदर होते हैं। ऐसे नासमझ नहीं होते। सुंदर अर्थात् वह अहंकार भी हमें मनोहर लगता है। मनोहर अर्थात् मन का हरण करने वाला लगता है। अब, जितनी शक्ति एक मनुष्य में हैं उतनी शक्ति दूसरे में हैं या नहीं? इन्डिया में बर्थ (जन्म) है, यहीं पर जन्म हुआ है तो शक्ति सभी में हैं ही न! उन्हें डेवेलप करने की ज़रूरत है।

ज्ञानी का अंतःकरण कैसे कार्य करता है? 'खुद' यदि हट जाए तो 'अंतःकरण' से 'आत्मा' अलग ही है। आत्मा अलग हो जाए तो सांसारिक कार्य अंतःकरण से चलते रहते हैं। अलग कर देने के बाद में ज्ञानी का अंतःकरण खुद ही स्वाभाविक रूप से काम करता रहता है क्योंकि दखलंदाज़ी बंद हो गई न, इसलिए अंतःकरण का कार्य सब से अच्छा और जहाँ ज़रूरत हो वहीं पर होता है और लोगों के लिए उपयोगी होता है। आत्मा अलग हो जाने पर सांसारिक कार्य अंतःकरण से चलते रहते हैं, इसी को सहज कहते हैं!

मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हाज़िर ही रहते हैं, उनसे संपूर्ण जागृत रहते हैं, वीतराग ही रहते हैं।

अब मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार सब रहते हैं, और 'खुद' उनसे जागृत ही रहते हैं कि, 'ये' वे हैं और 'यह' हम हैं, 'ये' वे हैं और 'यह' हम हैं और संपूर्ण वीतरागभाव से रहते हैं। ज्ञानी का अंतःकरण शुद्धात्मा जैसा ही हो जाता है इसलिए औरों को ऐसा ही लगता है कि ये तो भगवान जैसे मनुष्य हैं! वर्ना, जिसकी दखलंदाज़ी होती है, उसे लोग भगवान के तौर पर स्वीकार नहीं करते। और अंतःकरण (खत्म हो) गया वह भगवान बन जाता है, यहीं पर भगवान! अरे, हम

में अभी चार डिग्री की कमी है, उसकी यह झंझट है! तभी आपके साथ बैठे हैं, वर्ना बैठते क्या?

देखने से होती है, अंतःकरण की शुद्धि

प्रश्नकर्ता : मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार पर अपना प्रभाव पड़ना चाहिए न?

दादाश्री : मशीनरी पर कभी भी प्रभाव पड़ता ही नहीं। इसलिए मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार पर प्रभाव पड़ता ही नहीं। वह तो अंतःकरण खाली हो जाए, तब अपने आप ही सब ठिकाने पर आ जाता है। 'इनका' साथ नहीं दें और 'इन्हें' देखते ही रहें, तो आप मुक्त ही हैं। जितने समय तक 'आप' इन्हें देखते रहें, उतने समय चित्त की शुद्धि होती रहती है।

प्रश्नकर्ता : हमें शुद्धात्मा के रूप में रहकर अपने अहंकार-मन और बुद्धि को देखते रहना है और फिर आपने कहा है कि उन्हें शुद्ध किए बगैर हमारा छुटकारा नहीं हो सकता तो फिर जिस घड़ी हमें शुद्धात्मा पद प्राप्त हुआ, तो वे यों ही शुद्ध नहीं हो जाते?

दादाश्री : वह तो हमारी आज्ञा का पालन करोगे तब देख सकोगे। उन्हें देखने से शुद्ध हो जाते हैं। उन्हें अशुद्ध देखा, अशुद्ध कल्पना की इसलिए बंध गए। उन्हें शुद्ध देखा तो फिर मुक्त हो जाओगे।

प्रश्नकर्ता : सिर्फ उन्हें देखते रहने से ही वह प्रकिया शुरू हो जातीहै?

दादाश्री : हाँ, चंदूभाई क्या कर रहे हैं, वह आपको देखते रहना है। चंदूभाई की बुद्धि क्या कर रही है, चंदूभाई का मन क्या कर रहा है, उन्हें देखते रहना है। अच्छा माल हो तो भी फेंक देना है और खराब माल हो तो भी फेंक देना है। फेंक ही देना है न इसे! यानी स्वभाव में आ गए, फिर क्या? अतः देखते रहना है। माल जो भी है, उसकी कीमत नहीं है, नो वैल्यू। आत्मा प्राप्त करने के बाद *पुद्‌गल* की किसी भी तरह की वैल्यू नहीं है। 'ज्ञानी' की आज्ञा मन का शुद्धिकरण करती है। 'स्वरूप' का ज्ञान मन को कैसे भी संयोगों में समाधान देगा।

महात्माओं के अंतःकरण की स्थिति

अक्रम मार्ग के 'महात्माओं' के अंतःकरण की स्थिति कैसी होती है? उनकी दखलंदाज़ी बंद हो चुकी होती है। लेकिन जब पिछले परिणाम आते हैं तब खुद को उलझन हो जाती हैं कि, 'मेरे ही परिणाम हैं'। जब 'हम से' पूछते हैं कि, 'खुद के परिणाम हैं या किसी और के?' तो मैं बताता हूँ कि, 'ये तो किसी और के परिणाम हैं।'

इस ज्ञान के बाद 'हमारा' तो 'ज्ञाता-ज्ञेय' का इन मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार से संबंध है। हम ज्ञाता हैं और अंतःकरण, वह ज्ञेय है। ज्ञेय-ज्ञाता संबंध हैं, शादी संबंध नहीं है। इसलिए अलग ही रहते हैं वे 'हम' से। अपने पास हर एक चीज़ हैं। कोई चीज़ अपने पास न हो ऐसा नहीं है। इसलिए अब ये मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार का आयोजन इस तरह से करो कि यह ज़िंदगी सार्थक हो जाए।

अंतःकरण शुद्ध करना है। यह सब अंतःकरण की अशुद्धता हो गई है इसीलिए यह संसार खड़ा हो गया है और वह अंतःकरण की शुद्धता से मोक्षमार्ग मिल जाता है। यह ज्ञान तो आखिर में मोक्ष में पहुँचने तक साथ ही रहेगा। यहाँ हमारी हाज़िरी में अंतःकरण की शुद्धि होती रहती है। उससे दुःख देना बंद हो जाता है। उसके बाद शुद्धि होती है। उस शुद्धि से तो सच्चा आनंद उत्पन्न होता है! सदा की शांति होती है!

जय सच्चिदानंद

फर्क, उपयोग और जागृति में

प्रश्नकर्ता : आत्मा का उपयोग और आत्मा की जागृति, इन दोनों में क्या डिफरेन्स है?

दादाश्री : डिफरेन्स तो यह लाइट जलती रहे और आप कोई काम नहीं करो और सोते रहो तो लाइट व्यर्थ जाएगी न? और यह जो लाइट का प्रकाश है, वह जागृति ही है लेकिन यदि उसमें पढ़ोगे तो उसे उपयोग करना कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी कि जागृति को एक जगह पर केंद्रित करना, वही उपयोग कहलाता है?

दादाश्री : ज्ञान देते हैं इसलिए जागृति तो है ही। उससे काम लेना है। जागृति तो यों ही चली जाती है, यदि उपयोग करेंगे तो काम में आएगी। इलेक्ट्रिसिटी है ही अंदर, उसी को जागृति कहते हैं लेकिन बटन दबाने पर ही प्रकाश होगा न! यह जो बटन दबाते हैं, वह उपयोग है। वर्ना गर्मी में हाथ से पंखा घुमाना होगा। अरे, बटन दबा न! उपयोग कर न!

फर्क, शुद्ध उपयोग और ज्ञाता-द्रष्टा में

प्रश्नकर्ता : शुद्ध उपयोग, देखना व जानना और ज्ञाता-द्रष्टा, इन तीनों में क्या अंतर है?

दादाश्री : वे तीनों एक से ही हैं लेकिन शुद्ध उपयोग लंबा-चौड़ा होता है। शुद्ध उपयोग यानी आप किसी से कहो कि, 'तूने मुझे गाली क्यों दी?' तो वह आपका शुद्ध उपयोग नहीं है। आपके लक्ष में या ध्यान में रहे कि 'नगीन भाई ने चंदूभाई को गाली दी', ऐसा आपको रहे तो वह शुद्ध उपयोग कहा जाएगा। यदि ऐसा कहें कि 'इन नगीन भाई ने मुझे गाली दी' तो वह शुद्ध उपयोग नहीं कहा जाएगा। कोई भी दोषित नहीं दिखाई दे तो उसे कहेंगे शुद्ध उपयोग। कोई भी दोषित नहीं है, जगत् निर्दोष ही है।

प्रश्नकर्ता : अब ऐसा जब होता है उस समय 'देखना व जानना' का अर्थ क्या है?

दादाश्री : राग-द्वेष नहीं करना, वही 'देखना-जानना' कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : यानी 'देखना व जानना', वह उपयोग से एक स्टेप आगे है?

दादाश्री : नहीं। सब से उत्तम बात शुद्ध उपयोग की है। शुद्ध उपयोग सब से अंतिम स्टेशन है और उसका फल है, 'देखना व जानना'। शुद्ध देखता है व जानता है, उसी को शुद्ध उपयोग कहते हैं। अन्य बहुत प्रकार से शुद्ध उपयोग कहा जाता है। सामने वाला भी शुद्ध ही है, ऐसा लगना चाहिए। क्या आपको ऐसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : दोषित दिखाई देने के बाद में फिर उसके प्रतिक्रमण हो जाते हैं।

दादाश्री : ठीक है, तब भी चलेगा।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

छत्रपति संभाजीनगर

11 अक्तूबर (शनि) – शाम 5 से 7 – आप्तपुत्र **सत्संग**

12 अक्तूबर (रवि) – शाम 4 से 7-30 – **ज्ञानविधि**

स्थल : सागर रिसॉर्ट, धुत अस्पताल के पीछे, जालना रोड, चिकलथाना MIDC. **संपर्क :** 8982543355

अडालज

20 अक्तूबर (सोम) – रात 8-30 से 10-30 **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

22 अक्तूबर (बुध) – **नूतन वर्ष (वि. सं. 2082) के अवसर पर विशेष कार्यक्रम**

25 अक्तूबर (शनि) – शाम 5 से 7 – **सत्संग** और **26 अक्तूबर** (रवि) शाम 4 से 7-30 – **ज्ञानविधि**

20 से 27 दिसम्बर – **आप्तवाणी 14 भाग-4 पर सत्संग पारायण** (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा।)

28 दिसम्बर – **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

मोरबी में परम पूज्य दादा भगवान का 118वाँ जन्मजयंती महोत्सव

1 नवम्बर (शनि)	शाम 5-30 से 8 – **महोत्सव शुभारंभ (सांस्कृतिक कार्यक्रम)** और **सत्संग**
2-3 नवम्बर (रवि-सोम)	सुबह 10 से 12-30 और रात 8-30 से 11 – **सत्संग**
4 नवम्बर (मंगल)	सुबह 8 से 9-30 – **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-संदेश-आरती**
	सुबह 10-30 से 1 और शाम 5 से 6 (पूज्यश्री के कार द्रष्टि दर्शन)
5 नवम्बर (बुध)	सुबह 10 से 12-30 – **सत्संग** और शाम 7-30 से 11 – **ज्ञानविधि**

स्थल : रवापर-धुनाडा रोड, पानी की टंकी के सामने, मोरबी, गुजरात. **संपर्क :** 9725344475

सूचना : रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी Akonnect ऐप पर दी जाएगी।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए भारत में टी.वी. चैनल पर...

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज़ शाम 7 से 7-30 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 7 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687, **भावनगर :** 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

सान होज़े : सत्संग - ज्ञानविधि : 19 से 23 जुलाई

सितम्बर 2025
वर्ष-20 अंक-11
अखंड क्रमांक - 239

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

नियंत्रण खुद के हाथ में आ जाए, तब होता है पुरुषार्थ

ये जो सारी क्रियाएँ होती हैं, वह एक ही जगह पर होती है, उसे हम 'अंत:करण' कहते हैं। अंत:करण में ये सारी क्रियाएँ हो रही हैं। हर बार एक-एक, मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, अपने-अपने फंक्शन में रहते हैं। अब, जब तक हम इस फंक्शन में काम करते रहते हैं, तब तक 'हम कौन हैं', यह हमें पता नहीं चलता। इस फंक्शन के बाहर निकलते हैं, तब 'हम कौन हैं' ऐसा पता चलता है। लेकिन ये फंक्शन के बाहर जाने ही नहीं देते, ये फंक्शन ऐसे हैं। क्षण भर के लिए भी, अंत:करण से बाहर किसी को जाने ही नहीं देते। यह मन भी ऐसा है, बुद्धि भी ऐसी है, चित्त भी ऐसा है और अहंकार भी ऐसा है। इन चार जनों का नियंत्रण है, इस शरीर पर। इसलिए भ्रांति रही हुई है। यदि खुद के हाथ में नियंत्रण आ जाए तो फिर यह झंझट नहीं रहेगा, पुरुषार्थ उत्पन्न होता है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.